Daily Gospel Reflections in Hindi

21 July 2019

लूकस 13:22-30

ENTER THROUGH THE NARROW DOOR

ईश्वर का मुक्तिविधान आदि काल से प्रभु के समय तक, और आज भी जस के तस है। ''विश्वमण्डल का प्रभु इस पर्वत पर सब राष्ट्रों के लिए एक भोज का प्रबंध करेगा... वह समस्त पृथ्वी पर से अपनी प्रजा का कलंक दूर कर देगा'' (Is. 25:6-8)। केवल यहूदियों को बचाना ईश्वर का मकसद कभी नहीं रहा। लेकिन यहूदी यह बात कभी नहीं समझ पाये। वे समझते थे कि केवल वे ही बचेंगे क्योंकि वे ईश्वर की चुनी हुई प्रजा है। प्रभु येसु, ईश्वर के पुत्र, भलीभांति जानते थे कि ईश्वर का असली मुक्तिविधान क्या है। वे हमेशा, अपने उपदेशों और दृष्टांतों द्वारा यह बात यहूदियों को समझाना चाहते थे। विवाह भोज के दृष्टांत (Mt. 22:1-14) में हम पढ़ते है – ''विवाह– भोज की तैयारी हो चुकी है, किन्तु अतिथि इसके योग्य नहीं ठहरे''। बाद में उनकी जगह सड़कों, चौराहों से जो भोज में आना चाहते थे, उनको बुलाया गया। यही संदेश हिंसक असामियों के दृष्टांत से भी मिलता है (Mt. 22-33 ff)। ''वह उन दुष्टों का सर्वनाश करेगा और अपनी दाखबारी का पट्टा दूसरे असामियों को देगा, जो समय पर फसल का हिस्सा देते रहेंगे''।

प्रभु से सवाल किया गया – ''क्या थोड़े ही लोग मुक्ति पाते है'' (Lk. 13:23)। पर सवाल ही गलत निकला। पूछना चाहिए था कि कौन बचेगा ? प्रभु कहते है ''जो लोग मुझे प्रभु! प्रभु! कहकर पुकारते है, उनमें सब–के–सब स्वर्गराज्य में प्रवेश नहीं करेंगे। जो मेरे स्वर्गिक पिता की इच्छा पूरी करता है, वही स्वर्गराज्य में प्रवेश करेगा'' (Mt. 7:21)। यहूदी अगर, मूसा द्वारा दी गई ईश्वर की दस आज्ञाओं का पालन करते है, तो वे बच जाऐगें (Dt. 4:10-14)। ''वह समय आ रहा है, जब तुम लोग न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोंगे और न येरुसालेम में ही।.... परंतु वह समय आ रहा है, आ ही गया है, जब सच्चे आराधक आत्मा और सच्चाई से पिता की आराधना करेंगे'' (Jn. 4:21-23)। यह प्रभु ने समारी स्त्री से कहा था। मतलब साफ है। केवल यहूदी होने से कोई नहीं बचता। केवल आज्ञाओं की बारीकी से पालन करने से कोई नहीं बचता। यह चेतावनी हम Catholic ईसाइओं के लिए भी है। केवल बप्तिस्मा ग्रहण करने से, फादर, सिस्टर बनने से कोई नहीं बचता। सकरे मार्ग से प्रवेश करना होगा, प्रभु के बताये रास्ता अपनाना होगा, क्रूस के रास्ते को जीवन का रास्ता बनाना होगा।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019